



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 87]

नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 20, 1982/फाल्गुन 29, 1903

No. 87] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 20, 1982/PHALGUNA 29, 1903

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

वित्त मंत्रालय
(आर्थिक कार्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 मार्च 1982

सा० का० नि० 259 (अ) :—केन्द्रीय सरकार, सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) की धारा 12 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित नियम बनाती है अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम, प्रारम्भ और लागू होना :—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम सामाजिक सुरक्षा नियम, 1982 है।

(2) ये 1-6-1982 को प्रवृत्त होंगे।

(3) ये सामाजिक सुरक्षा पत्र को लागू होंगे।

2. परिभाषाएँ :—इन नियमों में जब तक कि संदर्भ में अन्यथा प्रवेक्षित न हो :—

(i) “अधिनियम” से सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) अभिप्रेत है ;

(ii) “पत्र” से सामाजिक सुरक्षा पत्र अभिप्रेत है ;

(iii) “डाक मकिल” से महाडाकपाल या निदेशक, सैनिक डाक सेवा के प्रशासनिक प्राधिकार के अधीन आने वाले डाकघर अभिप्रेत हैं ;

(iv) “सहकारी सोसाइटी” से सहकारी सोसाइटी अधिनियम, 1912 (1912 का 2) के अधीन या उस समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत या रजिस्ट्रीकृत समझी गई सोसाइटी अभिप्रेत है ;

(v) “निगम” से उस समय प्रवृत्त किसी विधि द्वारा या उसके अधीन स्थापित निगम अभिप्रेत है किन्तु कंपनी इसके अन्तर्गत नहीं है ;

(vi) “प्ररूप” से इन नियमों से संलग्न कोई प्ररूप अभिप्रेत है ;

(vii) “सरकारी कंपनी” से कंपनी अधिनियम 1956 (1956 का 1) की धारा 617 में वर्णपरिभाषित कंपनी अभिप्रेत है ;

(viii) “पहुचान पत्र” से ऐसी पहुचान पत्र अभिप्रेत है जो नियम 11 के अधीन किसी पत्र के धारक को दी गई है ;

(ix) “स्थानीय प्राधिकरण” से ऐसा नगर निगम, नगरपालिका समिति, जिला बोर्ड, पत्तन प्रावृक्त निकाय या अन्य प्राधिकरण अभिप्रेत है, जो नगरपालिका या स्थानीय विधि के नियंत्रण या प्रबंध के लिए विधिक रूप से हकदार है या जिसे ऐसा नियंत्रण या प्रबंध सरकार द्वारा व्यक्त किया गया है ;

(x) “पुराना पत्र” से ऐसा पत्र अभिप्रेत है जो डाकघर बचत पत्र नियम, 1960 या राष्ट्रीय बचत पत्र (प्रथम निर्गम) नियम, 1965 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (चतुर्थ निर्गम) नियम, 1970 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (पंचम निर्गम) नियम, 1973 या राष्ट्रीय बचत वार्षिकी पत्र नियम, 1976 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (षष्ठम निर्गम) नियम, 1981 या राष्ट्रीय

बचत-पत्र (संलग्न नियम) नियम 1981 या राष्ट्रीय विकास वंशपत्र नियम, 1977 के अधीन दिया गया है,

(xi) "डाकघर" से भारत में ऐसा डाकघर अभिप्रेत है जो बचत बैंक का कार्य कर रहा है।

3. वे अभिधान जिनमें ये पत्र दिए जाएंगे।

पत्र 500 रु० और 1000 रु० के अभिधानों में जारी किए जाएंगे।

4. परिपक्वता श्रद्धा :—प्रमाणपत्र की परिपक्वता श्रद्धा नियम 8 के अधीन पत्र जारी किए जाने की तारीख से 10 वर्षों की।

5. पत्रों के क्रय के लिए प्रक्रिया और शर्तें :—कोई व्यक्ति या तो स्वयं लघु बचत योजना के किसी प्राधिकृत अधिकर्ता के माध्यम से प्ररूप 1 में (जो सभी डाकघरों में मुफ्त मिलता है) श्रावदन 1-6-1982 को या उसके पश्चात् किसी डाकघर में प्रस्तुत करके, निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए पत्र क्रय कर सकता है, अर्थात् :—

(क) श्रावेदक, किसी डाकघर में श्रान्त श्रावेदन प्रस्तुत करने के समय, 18 वर्ष से कम आयु का और 45 वर्ष से अधिक आयु का नहीं होगा।

स्पष्टीकरण :

इस खंड के प्रयोजन के लिए, श्रावेदक की जन्म की तारीख का उल्लेख करने वाले निम्नलिखित दस्तावेजों में से किसी भी एक को श्राव के सन्त के रूप में स्वीकार किया जाएगा, अर्थात् :—

(i) संबंध स्थानीय प्राधिकारी द्वारा जारी किया गया जन्म का प्रमाण पत्र ;

(ii) मैट्रिकुलेशन प्रमाणपत्र या उसका समतुल्य ;

(iii) किसी मातृत्व प्रांत विद्यालय, महाविद्यालय या अन्य शैक्षिक संस्था द्वारा जारी किया गया प्रमाणपत्र,

(iv) बपतिस्मा प्रमाण पत्र ;

(v) जीवन बीमा पालिसी या जीवन बीमा प्रीमियम की पहली रसीद जहां उसमें दर्शायी गई जन्म की तारीख भारतीय जीवन बीमा निगम या डाक जीवन बीमा प्राधिकारियों द्वारा स्वीकार की गई है या या उक्त निगम या प्राधिकारियों द्वारा जारी किया गया कोई पत्र ;

(vi) नियोजक द्वारा रखा गया सेवा अभिलेख, परन्तु यह तब जब कि नियोजक द्वारा जन्म की तारीख स्वीकार कर ली गई है ;

(ख) श्रावेदक का स्वास्थ्य अच्छा होगा और श्रावेदन की तारीख से पूर्ववर्ती तीस वर्ष की श्रद्धा के दौरान वह बसा, न्युमोनिया, खून की उल्टी, यक्ष्मा, उच्च और निम्न रक्त चाप, रूमेटोइड ज्वर, मधुमेह, पीलिया गुर्बों के किसी रोग, प्रोस्टेट ग्रन्थि या मूत्र तंत्र, पक्षाघात, उन्मत्तता, अपस्मार किसी भी प्रकार के दोरे या तंत्रिका विकार या मस्तिष्क या तंत्रिकातंत्र के किसी अन्य रोग कैसर, कुष्ठरोग, गठिया द्यूमर या रक्तज रोग से पीड़ित वा नहीं रहा है या ऐसी कोई श्रद्धा किया नहीं कराई है जिसके परिणाम स्वरूप श्रावेदक का दस दिन से अधिक के लिए अस्पताल में रहना पड़ा होगा ;

(ग) जहां किसी भी समय श्रावेदक के जीवन के बीमा का प्रस्ताव भारतीय जीवन बीमा निगम को या डाक जीवन बीमा स्कीम के अधीन किया गया है वहां ऐसा प्रस्ताव उक्त निगम द्वारा या उक्त स्कीम के अधीन अस्वीकार नहीं किया गया है ;

(घ) प्ररूप 1 में श्रावेदन सभी प्रकार से पूरा होगा और उसके साथ उक्त प्ररूप में यथाविनिर्दिष्ट दस्तावेज लगाए जाएंगे और उस पर श्रावेदक के हस्ताक्षर या यदि वह निरक्षर है तो उसके भंगुटे का चिह्न होगा जो किसी प्राधिकृत व्यक्ति की उपस्थिति में उसके द्वारा लगाया

जाएगा और उक्त प्ररूप में अन्तर्विष्ट घोषणाओं में, जैसा उसमें, श्रद्धा निविष्ट है उसके सिवाय, किसी भी रीति में कोई परिवर्धन खिलोपन या उपान्तरण नहीं किया जाएगा।

स्पष्टीकरण : इस खंड के प्रयोजन के लिए "प्राधिकृत व्यक्ति" से उक्त डाकघर का जिसमें श्रावेदन प्रस्तुत किया जाता है, डाकघर या महा निर्देशक डाकघर द्वारा डाकघर का इस निमित्त प्राधिकृत कोई अन्य पदधारी या लघु वचन स्कीम का कोई प्राधिकृत अधिकर्ता अभिप्रेत है ;

(ङ) श्रावेदन के साथ श्रावेदन पत्र के श्रान्त मूल्य का संदाय किया जाएगा ;

(च) श्रावेदक इन नियमों के अधीन पहले ही क्रय किए गए किसी अन्य पत्र के ध्योरे भी देगा।

6. पत्र धारण करने की सीमा :—कोई भी व्यक्ति किसी भी समय ऐसे सकल श्रान्त मूल्य के जो 5000 रु० से अधिक है, पत्रों का क्रय नहीं करेगा या उन्हें धारण नहीं करेगा। स्पष्टीकरण इस नियम के प्रयोजन के लिए :—

(क) किसी व्यक्ति द्वारा परिपक्वता श्रद्धा से परे धृत किसी पत्र को छोड़ दिया जाएगा।

(ख) नियम 13 के अधीन ऐसे व्यक्ति द्वारा गिरवी रखे गए पत्र को गणना में लिया जाएगा।

7. श्रद्धा निविदा :—पत्र के क्रय के लिए संदाय निम्नलिखित रीतियों में से किसी में किसी डाकघर में किया जा सकेगा, अर्थात् :—

(1) नकद ;

(2) बैंक, श्रादायगी श्रावेण या मांग देय ड्राफ्ट ;

(3) डाकघर बचत बैंक खाते से प्रत्याहरण के लिए पासबुक सहित प्रत्याहरण प्ररूप, जो सम्यक् रूप से हस्ताक्षरित है ;

(4) उस पुराने परिपक्व पत्र का अन्वयण, जो निम्नलिखित रूप में सम्यक् रूप से उन्मोचित किया गया है

"नए पत्र के जारी करने के संदाय प्राप्त हुआ —

संलग्न श्रावेदन देखिए।"

8. पत्रों का जारी किया जाता :— (1) नियम 7 के अधीन संदाय करने पर उसके सिवाय, जहां संदाय बैंक, श्रादायगी श्रावेण या मांगदेय ड्राफ्ट द्वारा किया जाता है, प्रसामान्यतः पत्र तत्काल जारी किया जाएगा और ऐसे पत्र की तारीख ऐसे संदाय की तारीख होगी।

(2) जहां पत्र क्रय करने के लिए संदाय बैंक, श्रादायगी श्रावेण या मांग देय ड्राफ्ट के द्वारा किया जाता है वहां यथास्थिति, बैंक, श्रादायगी श्रावेण या मांग देय ड्राफ्ट के श्रागमों के बसल होने से पूर्व ऐसा पत्र जारी नहीं किया जाएगा और ऐसे पत्र की तारीख, यथास्थिति, बैंक, श्रादायगी श्रावेण या मांग देय ड्राफ्ट के भुनाने की तारीख होगी।

(3) यदि किसी कारण से पत्र तत्काल जारी नहीं किया जा सकता है तो जैसा कि ऐसी अनतिम रसीद दी जाएगी जो बाद में पत्र में बदली जा सकेगी और ऐसे पत्र की तारीख वह होगी जो, यथास्थिति, उपनियम (1) या उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट है।

9. पुराने पत्र के आगमों के बदले में पत्र :—पुराने पत्र का ऐसा धारक, जो उस पत्र के भुनाने का हकदार है, प्ररूप 1 में इन नियमों के अधीन पत्र के जारी किए जाने के लिए श्रावेदन कर सकेगा और ऐसे श्रावेदन की प्राप्ति पर श्रावेदक को इन नियमों के अधीन पत्र जारी किया जाएगा और जारी करने की तारीख वह होगी, जिसको सम्यक् उन्मोचित पुराना पत्र प्रस्तुत किया जाता है।

10. अन्तिम वृत्तियाँ : (1) इन नियमों के उल्लंघन में कृप या अर्जित किए गए किसी पत्र को धारक द्वारा यथाशीघ्र भुनाया जाएगा जैसे ही इन नियमों के उल्लंघन में धूलि के तथ्य के बारे में उसे पता चलता है और इन नियमों में उल्लंघन में किसी धूलि पर कोई श्वाज नहीं दिया जाएगा।

11. पहचान पर्ची—(1) यदि किसी पत्र के धारक द्वारा उस डाकघर में, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है, किसी भी समय पहचान पर्ची जारी करने के लिए निवेदन किया जाता है, तो ऐसे धारक की पहचान पर्ची, उसके द्वारा उस पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् जारी की जाएगी।

(2) पत्र के अन्तिम उन्मोचन के समय पहचान पर्ची अस्पष्ट की जाएगी या उसके खो जाने पर ऐसे खो जाने के बारे में डाकघर महानिदेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में डाकघर को धोषणा दी जाएगी।

12. एक डाक घर से दूसरे डाकघर को अन्तरण : (1) कोई पत्र, किसी ऐसे डाक घर से, जहाँ वह रजिस्ट्रीकृत है, किसी अन्य डाकघर को, डाकघर महानिदेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में धारक द्वारा दोनों डाकघरों में से किसी डाकघर में भ्रावेदन करने पर अन्तर्गित किया जा सकेगा।

परन्तु जहाँ कोई व्यक्ति एक से अधिक पत्र धारण करता है और उनकी परिपक्वता अवधि समाप्त नहीं हुई है वहाँ ऐसे सभी पत्र एक ही डाक सकल के किसी डाकघर या किन्हीं डाकघरों में रजिस्ट्रीकृत किए जायेंगे।

13. पत्र का गिरवी रखा जाना : उस कार्यालय का डाकपाल जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है—

- (क) भारत के राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपाल के पास उसकी शासकीय हैमियन में;
- (ख) भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अनुसूचित बैंक या सहकारी सोसायटी जिसके अन्तर्गत सहकारी बैंक भी हैं;
- (ग) किसी निगम या सरकारी कम्पनी के पास; और
- (घ) किसी स्थानीय प्राधिकरण के पास;

प्रतिभूमि के रूप में गिरवी रखने के लिए पत्र के अन्तरण की अनुमति देगा :

परन्तु यह तब जब कि ऐसे अन्तरण के लिए पत्र के धारक और गिरवीदार द्वारा महानिदेशक, डाक मार द्वारा अधिकथित प्ररूप में भ्रावेदन किया जाता है।

(2) जब उपनियम (1) के अधीन किसी पत्र का अन्तरण किया जाता है तो ऐसे कार्यालयों का डाकपाल जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है पत्र पर निम्नलिखित पृष्ठांकन करेगा, अर्थात् :

“प्रतिभूमि के रूप में को अन्तरित”

(3) इन नियमों में जैसा अन्यथा उपबन्धित है उस के सिवाय, इस नियम के अधीन किसी पत्र के गिरवीदार के बारे में तब तक यह समझा जाएगा कि वह पत्र का धारक है जब तक कि उसका पुनः अन्तरण उपनियम (4) के अधीन नहीं हो जाता है।

(4) उपनियम (2) के अधीन अन्तरित पत्र को गिरवीदार के लिखित प्राधिकार पर, प्राधिकृत डाकपाल की लिखित रूप में पूर्ण संजूरी से पुनः अन्तरित किया जा सकेगा और जब ऐसा पुनः अन्तरण किया जाता है तब ऐसे कार्यालय का, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है डाकपाल, पत्र पर निम्नलिखित पृष्ठांकन करेगा अर्थात्—

का पुनः अन्तरित”।

टिप्पण 1—भारत सरकार का ऐसा राजपत्रित अधिकारी जो राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपाल की ओर से उपनियम (1) के अधीन प्रतिभूमि के रूप में पत्र स्वीकार करता है या उपनियम (4) के अधीन गिरवी का निर्मोचन करता है, यह प्रमाणित करेगा कि वह भारत के राष्ट्रपति, राज्य के राज्यपाल की ओर से लिखित या विवेक निष्पादित करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 299 के अधीन सम्यक रूप से प्राधिकृत है और उसे इस प्रकार प्राधिकृत करने वाली सरकार की अधिसूचना के संख्यांक और तारीख की विशिष्टियाँ भी देगा।

टिप्पण 2 यथास्थिति भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अनुसूचित बैंक या किसी सहकारी सोसायटी का, जिसके अन्तर्गत सहकारी बैंक भी है, किसी निगम का किसी सरकारी कंपनी या किसी स्थानीय प्राधिकरण का ऐसा अधिकारी जो संबंधित संस्था की ओर से उपनियम (1) के अधीन प्रतिभूमि के रूप में पत्र स्वीकार करता है या उपनियम (4) के अधीन गिरवी का निर्मोचन करता है तारीख सहित अपने हस्ताक्षर और कार्यालय की मुद्रा के अधीन यह प्रमाणित करेगा कि वह उक्त संस्था के अनुच्छेदों के अधीन उसकी ओर से ऐसी लिखित या विवेक निष्पादित करने के लिए सम्यक रूप से प्राधिकृत है।

(5) जहाँ किसी पत्र पर उपनियम (2) और (4) के अधीन किए गए अनेक पृष्ठांकनों के परिणामस्वरूप उस पत्र पर उसी प्रकार का अतिरिक्त पृष्ठांकन करने के लिए कोई स्थान शेष नहीं रहता है, वहाँ ऐसे पत्र के बदले में रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय के डाकपाल द्वारा एक नया पत्र जारी किया जा सकेगा।

(6) उपनियम (6) के अधीन जारी किए गए किसी नए पत्र को इन नियमों के सभी प्रयोजनों के लिए उस पत्र के समतुल्य समझा जाएगा जिसके बदले में वह जारी किया गया है।

14. खो गए या नष्ट हो गए पत्र का प्रतिस्थापन : (1) यदि कोई पत्र खो जाता है चोरी हो जाता है, नष्ट हो जाता है, विकृत हो जाता है या बिरुपित हो जाता है तो उसका हकदार व्यक्ति, उस डाकघर को, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है या किसी अन्य डाकघर को, जिस वहाँ में भ्रावेदन उस डाकघर को, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है, भेज दिया जाएगा, पत्र की दूसरी प्रति लिए जाने के लिए, भ्रावेदन कर सकेगा।

(2) ऐसे प्रत्येक भ्रावेदन के साथ निम्नलिखित होंगे, अर्थात्—

(क) विशिष्टियाँ दर्शित करने वाला विवरण, जैसे कि पत्र का संख्यांक, रकम और तारीख तथा वे परिस्थितियाँ जिनमें ऐसी हानि, चोरी, विनाश, विकृति या बिरुपण हुआ है;

(ख) पहचान पर्ची, यदि कोई हो।

(3) यदि उस डाकघर के, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है, भार माघक अधिकारी का पत्र खो जाने, चोरी, विनाश, विकृति या बिरुपण के बारे में समाधान हो जाता है, तो वह पत्र की दूसरी प्रति तब जारी करेगा जब भ्रावेदक एक या अधिक अनुमोदित प्रतिभूमियाँ या बैंक, गारण्टी सहित डाकघर महानिदेशक द्वारा अधिकथित प्ररूप में एक अनिपूर्ति बन्धपत्र दे देता है।

परन्तु यह कि जहाँ खो गए, चोरी हुए, नष्ट हुए, विकृत हुए या बिरुपित हुए पत्र का अधिकतम मूल्य 500 रु० है वहाँ पत्र या पत्रों की दूसरी प्रति ऐसी प्रतिभूमि या गारण्टी के बिना एक अनिपूर्ति बन्धपत्र देने पर भ्रावेदक को जारी की जा सकेगी।

परन्तु यह और कि जहाँ ऐसा भ्रावेदन ऐसे पत्र के बारे में किया जाता है जो विकृत या बिरुपित है, तो चाहे वह कितने ही अधिकतम मूल्य का है वहाँ पत्र की दूसरी प्रति ऐसे किसी अनिपूर्ति बन्धपत्र प्रतिभूमि या गारण्टी के बिना तब जारी की जा सकेगी, जब विकृत या बिरुपित पत्र और पहचान पर्ची, यदि कोई हो का अस्पष्ट किया जाता है और पत्र की पहचान मूल रूप से जारी किए गए पत्र के रूप में की जा सकती है।

(4) उपनियम (3) के अधीन जारी की गई पत्र की दूसरी प्रति को इन नियमों के सभी प्रयोजनों के लिए मूल पत्र के समतुल्य माना जाएगा सिवाय इसके कि इसे उस डाकघर से, जिसमें ऐसे पत्र का रजिस्ट्रीकरण हुआ है, भिन्न किसी डाकघर में पूर्व सत्यापन के बिना भुनाया नहीं जा सकेगा।

15. नामनिर्देशन : (1) उपनियम (2) से (4) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, पत्र का धारक, पत्र क्रय करते हुए समय-समय प्ररूप 1 में आवश्यक विशिष्टियाँ भर कर ऐसे किसी व्यक्ति या किन्हीं व्यक्तियों को नाम निर्दिष्ट कर सकेगा जो धारक की मृत्यु की दशा में पत्र और उस पर शोध्य रकम के संदाय के हकदार होंगे। यदि पत्र क्रय करते समय ऐसा कोई नामनिर्देशन नहीं किया जाता है तो धारक, पत्र क्रय करने के पश्चात् किसी भी समय, किन्तु उसके परिपक्व होने के पूर्व, उस डाकघर के जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है, डाकपाल को प्ररूप 2 में एक आवेदन करके नाम निर्देशन कर सकेगा।

(2) इस नियम के अधीन पत्र के धारक द्वारा किए गए नाम निर्देशन को, उस डाकघर के जहाँ वह रजिस्ट्रीकृत है डाकपाल को पत्र सहित प्ररूप 3 में आवेदन करके रद्द या परिवर्तित किया जा सकेगा।

(3) विभिन्न तारीखों पर रजिस्ट्रीकृत किए गए पत्रों की बाबत नाम निर्देशन के लिए या किसी नाम निर्देशन के रद्दकरण या किसी नाम निर्देशन में परिवर्तन करने के लिए पृथक् आवेदन किए जायेंगे।

(4) नाम निर्देशन या किसी नाम निर्देशन का रद्दकरण या किसी नाम निर्देशन में परिवर्तन संबंध प्रधान डाकघर में रजिस्ट्रीकृत किया जाएगा और रजिस्ट्रीकरण का तथ्य पत्र पर लिखा जाएगा और ऐसे रजिस्ट्रीकरण पर यथास्थिति उक्त नाम निर्देशन या नाम निर्देशन का रद्दकरण या परिवर्तन उस तारीख से प्रभावी समझा जाएगा जिस तारीख को पत्र प्रस्तुत किया गया था।

16. परिपक्व होने पर संदाय या किसी पत्र की परिपक्वता अवधि की समाप्ति पर, यथास्थिति उसका धारक या उसकी मृत्यु होने की दशा में, उसका नाम निर्देशित या यदि कोई उत्तरजीवी नामनिर्देशित नहीं है तो धारक का विधिक वारिस, यदि पत्र 500 रु० के अधिधान का है तो ब्याज सहित 1500 रु० या यदि पत्र 1000 रु० के अधिधान का है तो 3000 रु० की राशि प्राप्त करने का हकदार होता और ऐसा ब्याज नीचे सारणी में यथा निर्दिष्ट रूप में प्रत्येक वर्ष के अंत में प्रोवभूत होगा और इस प्रकार प्रोवभूत होने वाला ब्याज प्रत्येक वर्ष के अंत में नवें वर्ष के अंत तक धारक की ओर से पुनर्निर्दिष्ट किया गया माना जाएगा और पत्र के अंकित मूल्य की रकम में जोड़ा जायेगा।

सारणी

वर्ष जिसके लिए ब्याज प्रोवभूत होता है	500 रु०	1000 रु०
		के अधिधान वाले पत्र पर प्रोवभूत होने वाले ब्याज की रकम (रु० में)
पहला वर्ष	58.06	116.12
दूसरा वर्ष	64.80	129.60
तीसरा वर्ष	72.33	144.66
चौथा वर्ष	80.73	161.46
पांचवां वर्ष	90.10	180.20
छठा वर्ष	100.57	201.14
सातवां वर्ष	112.24	224.48
आठवां वर्ष	125.28	250.56
नवां वर्ष	139.83	279.66
दसवां वर्ष	156.06	312.12

17. समय पूर्व भुनाता (1) नियम 16 में किसी बात के होते हुए, भी, पत्र, धारक के विकल्प पर, पत्र की तारीख से तीन वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किसी भी समय बट्टे पर समय पूर्व भुनाया जा सकेगा और ऐसे समय पूर्व भुनाए जाने पर संवेय रकम, पत्र के अंकित मूल्य और उतने पूर्ण वर्षों और मासों के लिए साधारण ब्याज सहित जिन में पत्र धारण किया गया है, रकम, के समतुल्य होगी। ऐसा ब्याज उस दर पर संगणित किया जाएगा जो दर भुनाए जाने की तारीख को डाकघर बचत बैंक में एकल खातों के प्रचलन के वचत खातों का लागू होगी। पूर्वोक्त साधारण ब्याज और नियम 16 के अधीन प्रोवभूत ब्याज के बीच के अन्तर को बट्टा माना जाएगा।

(2) उपनियम (1) और नियम 16 में किसी बात के होते हुए, भी और उपनियम (3) और (4) के अधीन रहते हुए, किसी पत्र की तीन वर्ष की समाप्ति के पूर्व निम्नलिखित परिस्थितियों में समय पूर्व भुनाया जा सकेगा, अर्थात् :—

(क) जब गिरवी इन नियमों के अनुकूल है तब ऐसे गिरवीदार द्वारा समग्रहण पर, या

(ख) न्यायालय का आदेश होने पर।

(3) यदि कोई पत्र, पत्र की तारीख से एक वर्ष की अवधि के भीतर उपनियम (2) के अधीन भुनाया जाता है तो पत्र का केवल अंकित मूल्य संवेय होगा और कोई ब्याज संवेय नहीं होगा।

(4) यदि कोई पत्र, उपनियम (2) के अधीन, पत्र की तारीख से एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किन्तु तीन वर्ष की समाप्ति के पूर्व भुनाया जाता है तो भुनाया जाना बट्टे पर होगा और संवेय रकम तथा बट्टा वह होगा जो उपनियम (1) में निर्दिष्ट है।

18. परिपक्वता अवधि के दौरान धारक की मृत्यु हो जाने की दशा में संदाय :

(1) नियम 21 और उपनियम (2), (3) और (4), के अधीन रहते हुए, किसी पत्र के धारक की

(क) पत्र के जारी किए जाने की तारीख से दो वर्ष की समाप्ति के पश्चात् और उस पत्र की परिपक्वता अवधि की समाप्ति के पूर्व किसी भी समय किसी भी कारण से; या

(ख) पत्र जारी किए जाने की तारीख से दो वर्ष की समाप्ति के पूर्व किसी भी समय किसी एक या अधिक अप्राकृतिक कारणों से

मृत्यु हो जाने पर, यथास्थिति नामनिर्देशित, या; यदि कोई उत्तर जीवी नाम निर्देशित नहीं है तो धारक का विधिक वारिस, मृत धारक द्वारा धृत प्रत्येक ऐसे पत्र की बाबत यथास्थिति, 500 रु० या 1000 रु० के पत्र के अधिधान के अनुसार 1500 रु० या 3000 रु० की राशि का संदाय प्राप्त करने का हकदार होगा।

स्पष्टीकरण : खंड (ख) के प्रयोजन के लिए "अप्राकृतिक धारण" से बाढ़, हिंसात्मक और दृष्ट्य साधनों से हुई दुर्घटनाएं अभिप्रेत हैं और इसके अन्तर्गत रेल तथा सड़क दुर्घटनाएं विद्युन्मार्ग, सर्वदश, डूबना अग्नि और जंगली पशुओं द्वारा आक्रमण है किन्तु आत्म-अति और आत्म हत्या इसके अन्तर्गत नहीं है।

(2) यदि इस बाबत शंका उत्पन्न होती है कि धारक की मृत्यु आत्म-अति या आत्महत्या से भिन्न किसी अप्राकृतिक कारण से हुई थी या नहीं, तो उस जिला क्लर्क या जिला मजिस्ट्रेट द्वारा जिसकी अधिकारता में मृत्यु का स्थान आता है, प्ररूप 4 में दिया गया प्रमाणपत्र अस्तित्व होगा।

(3) उपनियम (1) के अधीन संदाय मृत धारक द्वारा धृत 5000 रु० के समकल अंकित मूल्य की सीमा तक निर्बंधित होगा और मृत धारक द्वारा ऐसी सीमा से अधिक धृत और जो उसकी मृत्यु की तारीख

को परिपक्व नहीं हुए हैं किसी पत्र की बाबत ऐसे पत्र का अंकित मूल्य उसकी परिपक्वता अवधि की समाप्ति पर ही बिना किसी व्याज के यथास्थिति, धारक के नाम निर्देशिनी या विधिक वारिस को संवेद्य होगा :

परन्तु यह कि ऐसा अंकित मूल्य, यदि पत्र

(क) जब गिरवी इन नियमों के अनुरूप है तब ऐसे गिरवीदार द्वारा पत्र के समपहरण पर, या

(ख) न्यायालय का आदेश होने पर, प्रस्तुत किया जाता है तो बिना व्याज के तुरन्त संवेद्य होगा।

(4) यदि ऐसा पाया जाता है कि धारक की जन्म की तारीख के संबंध में या पत्र को जारी किए जाने या उसके संदाय से सुसंगत किसी अन्य साखान सत्य के विषय में किसी भी प्रक्रम पर कपटपूर्ण अवधारण कथन किया गया है या सूचना छिपाई गई है तो उस वशा में, ऐसे पत्र का अंकित मूल्य उसकी परिपक्वता अवधि की समाप्ति पर ही बिना किसी व्याज के यथास्थिति उसके नाम निर्देशिनी या विधिक वारिस को संवेद्य होगा :

परन्तु यह कि ऐसा अंकित मूल्य, यदि पत्र

(क) जब गिरवी इन नियमों के अनुरूप, है तब ऐसे गिरवीदार द्वारा पत्र के समपहरण पर, या

(ख) न्यायालय का आदेश होने पर,

प्रस्तुत किया जाता है तो बिना व्याज के तुरन्त संवेद्य होगा।

स्पष्टीकरण : इस उपनियम के प्रयोजन के लिए यदि इस संबंध में यह प्रश्न उठता है कि धारक की जन्म की तारीख के संबंध में या पत्र को जारी किए जाने या उसके संदाय से सुसंगत किसी अन्य साखान सत्य के विषय में कपटपूर्ण अवधारण कथन किया गया है या नहीं अवस्था सूचना छिपाई गई है या नहीं, तो उस संबंध में केन्द्रीय सरकार का विनिश्चय अंतिम होगा।

(5) उक्त मामलों में जो उपनियम (1) के खंड (ख) के अंतर्गत नहीं आते हैं, किसी पत्र के धारक की, पत्र की तारीख से दो वर्ष की समाप्ति के पूर्व किसी भी समय मृत्यु हो जाने पर, नामनिर्देशिनी या, यदि कोई उत्तरजीवी नाम निर्देशिनी नहीं है तो धारक का विधिक वारिस, अपने विकल्प पर—

(i) पत्र को उसकी परिपक्वता अवधि की समाप्ति पर भुना सकेगा जिस दशा में वह पत्र के 500 रु० या 1000 रु० के अधिष्ठान के अनुसार यथास्थिति 1500 रु० या 3000 रु० की राशि प्राप्त करने का हकदार होगा, या

(ii) पत्र का उसकी परिपक्वता अवधि की समाप्ति के पूर्व किसी समय भुना सकेगा जिस दशा में वह नियम 17 के उपनियम (1) में यथाविनिर्दिष्ट व्याज सहित पत्र के अंकित मूल्य के समस्त राशि प्राप्त करने का हकदार होगा परन्तु यदि पत्र उसकी तारीख से एक वर्ष की समाप्ति के पूर्व भुनाया जाता है तो ऐसा कोई व्याज संवेद्य नहीं होगा।

19. भुनाए जाने का स्थान कोई पत्र उस डाकघर से, जहां वह रजिस्ट्रीकृत है भुनाया जा सकेगा :

परन्तु पत्र को किसी अन्य डाकघर से यदि उस डाकघर के भार-साधक अधिकारी का, पहचान पत्रों प्रस्तुत करने पर या उसमें रजिस्ट्रीकरण के डाकघर से यह स्थापन करने पर कि भुनाने के लिए पत्र प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति उसके लिए हकदार है, समाधान हो जाता है, भुनाया जा सकेगा।

20 पत्रों का उन्मोचन (1) किसी पत्र के अधीन देय रकम को प्राप्त करने का हकदार व्यक्ति, इसके भुनाए जाने पर, उसके पत्र के संदाय प्राप्त करने के प्रमाण के रूप में हस्ताक्षर करेगा।

(2) पत्र भुनाने वाले किसी व्यक्ति को डाकघर द्वारा उन्मोचन का प्रमाणपत्र दिया जा सकेगा।

21. नामनिर्देशितियों या विधिक वारिसों के बाधे :

(1) यथास्थिति, नियम 16 या 18 के अधीन शोध्य रकम के संदाय का दावा करने के प्रयोजन के लिए, धारक का नामनिर्देशिनी या विधिक वारिस उस कार्यालय के, जहां पत्र रजिस्ट्रीकृत है, डाकपाल को आवेदन करेगा और ऐसे आवेदन के साथ निम्नलिखित भेजेगा, अर्थात् :—

(i) वह पत्र जिस पर संदाय का दावा किया है ;

(ii) पत्र के धारक की मृत्यु का सञ्ज्ञ ;

(iii) मृत नामनिर्देशिनी की, यदि कोई है, मृत्यु का सञ्ज्ञ ;

(iv) नियम 18 के उपनियम (1) के खंड (ख) के अंतर्गत आने वाले मामलों में, जिला कलक्टर या जिला मजिस्ट्रेट द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाण 4 में मृत्यु प्रमाणपत्र ;

(2) यदि, एक से अधिक यथास्थिति, नामनिर्देशिनी या वारिस हैं तो वे संदाय प्राप्त करने समय पत्र का संयुक्त उन्मोचन करेंगे ;

(3) जब नामनिर्देशिनी अवयस्क है तो अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (3) के अधीन नियुक्त व्यक्ति पत्र भुनाने समय यह प्रमाणित करेगा कि अवयस्क जीवित है और रकम अवयस्क की ओर अपेक्षित है।

(4) अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (4) के प्रयोजन के लिए नीचे वर्णित प्राधिकारी पत्र के धारक की मृत्यु पर प्रत्येक के सामने दी गई सीमा तक उसकी विल के प्रोबेट या उसकी संपदा के प्रशासन पत्र या भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 (1925 का 39) के अधीन दिए गए उत्तराधिकारों प्रमाणपत्र के प्रस्तुत किए बिना दावे को मंजूर करने के लिए सक्षम होंगे :—

प्राधिकारी का नाम	सीमा
(i) (क) परराज्यस्थित प्रधान डाकपाल और उप डाकपाल जो उच्चतर चयन श्रेणी में हैं	500 रु०
(ख) उच्चतर चयन श्रेणी में उप डाकपाल और उच्चतर चयन श्रेणी में सहायक प्रेसिडेंसी डाकपाल	500 रु०
(ii) समूह "ख" में उप डाकपाल और उप प्रेसिडेंसी डाकपाल	2000 रु०
(iii) (क) समूह "क" या समूह "ख" डाकपाल/प्रेसिडेंसी डाकपाल और डाकघरों का अधीक्षक/डाकघरों का ज्येष्ठ अधीक्षक	5000 रु०
(ख) डाक सचिवों के प्रधान (सहायक निदेशक/सहायक महाडाकपाल)	

22. सेना, वायु सेना और नौसेना के कामियों द्वारा धृत पत्रों का भुनाया जाना :—जहां पत्र ऐसे व्यक्ति द्वारा धृत है जो सेना अधिनियम, 1950 (1950 का 46) या वायु सेना अधिनियम, 1950 (1950 का 45) या नौसेना अधिनियम, 1957 (1957 का 62) के अधीन है और ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है या वह अभियोजन कर्ता है वहां उस कोर, विभाग, टुकड़ी, यूनिट या पोत का, जिसका कि मृत व्यक्ति या अभियाजक या, यथास्थिति, कमान आफिसर या न्यायोचित समिति उक्त डाकघर के भारसाधक अधिकारी को, जहां पत्र रजिस्ट्रीकृत है, पत्र के अधीन देय रकम का उसे संदाय करने के लिए एक अध्यापेक्षा भेज सकेगा।

सकोगी और डाकघर का भारसाधक अधिकारी ऐसी अध्यापिका का अनुपालन करने के लिए तब भी बाध्य होगा जब पत्र के धारक की मृत्यु या अभिव्यजन के समय किसी व्यक्ति के हक में किया गया कोई नामनिर्देशन प्रवृत्त है।

स्पष्टीकरण:—उपयुक्त अध्यापिका, सेना या वायु सेना के व्यक्ति की दशा में सेना और वायुसेना (प्राइवेट सम्पत्ति का व्यय) अधिनियम, 1950 (1950 का 40) की धारा 3 या 4 के अधीन या नौसेना के व्यक्ति की दशा में नौसेना अधिनियम, 1957 (1957 का 62) की धारा 171 या धारा 172 के अधीन की जाएगी।

23. एक अभिधान से दूसरे में संपरिवर्तन :—

(1) धारक द्वारा इन निमित्त आवेदन किए जाने पर कम अभिधानों के पत्र उसी सकल अंकित मूल्य के उससे अधिक अभिधान के पत्र या पत्रों में बदले जा सकेंगे या अधिक अभिधान का पत्र उसी सकल अंकित मूल्य के उससे कम अभिधान के पत्रों में बदला जा सकेगा :

परन्तु भिन्न तारीखों वाले पत्रों को उच्चतर अभिधान के पत्र या पत्रों में बदलने के लिए मिलाया नहीं जाएगा।

(2) बदले गए पत्र या पत्रों के जारी किए जाने की तारीख वही होगी जो अभ्यर्षित किए गए मूल पत्र या पत्रों की है, न कि वह तारीख जिसको पत्र बदला गया है।

24. आयकर :—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन इन पत्रों के व्याज पर आयकर, नियम 18 में विनिर्दिष्ट वार्षिक प्रावधान के आधार पर लगेगा किन्तु पत्र के उन्मोचन मूल्य के संदाय के समय आयकर की कोई कटौती नहीं की जाएगी।

परन्तु नियम 18 के उपनियम (1) के अधीन धारक के नामनिर्देशित या विधिकारि का संदेश कोई रकम ऐसे कर के लिए दर्शा नहीं होगी।

25. फीस :—(1) निम्नलिखित संयोजकों के बारे में दो रूपए की फीस प्रभावी होगी, अर्थात् :—

- (i) पत्र का नियम 13 के अधीन अन्तरण ;
- (ii) नियम 14 के उपनियम (2) के अधीन पत्र की दूसरी प्रति का जारी किया जाना ;
- (iii) नियम 20 के उपनियम (2) के अधीन उन्मोचन पत्र का जारी किया जाना ;
- (iv) नियम 23 के अधीन एक अभिधान से दूसरे अभिधान में संपरिवर्तन।

स्पष्टीकरण :—(1) जहाँ भिन्न-भिन्न आवेदनों पर क्रय किए गए पत्रों की बाबत उन्मोचन प्रमाणपत्र जारी किया जाता है वहाँ खंड (iii) के अधीन फीस ऐसे प्रत्येक आवेदन की बाबत पृथक-पृथक प्रसारित की जाएगी।

(2) खण्ड (iv) के अधीन संपरिवर्तन के लिए प्रमाणित को जाने वाली फीस ऐसे संपरिवर्तन पर जारी किए जाने के लिए अतिरिक्त पत्रों की संख्या पर आधारित होगी।

(3) नाम निर्देशन के रजिस्ट्रीकरण या नामनिर्देशन में परिवर्तन या उसके रद्दकरण के लिए प्रत्येक आवेदन पर एक रूपए की फीस प्रभावी होगी ;

परन्तु प्रथम नामनिर्देशन के रजिस्ट्रीकरण के किसी आवेदन पर कोई फीस प्रभावी नहीं होगी।

26. डाकघर का उत्तरदायित्व :—किसी व्यक्ति द्वारा पत्र का कब्जा अभिधान करने और उसे कण्टपूर्वक भुनाने से धारक को हुई हानि के लिए डाकघर उत्तरदायी नहीं होगा।

27. भूल की परिणुद्धि :—डाकघर महानिदेशक, या महाडाकघर या डाक प्रभागों के प्रधान अपनी-अपनी अधिकारिता में, या तो स्वप्रेरणा से या इन नियमों के अनुसरण में जारी किए गए पत्र में हितबद्ध किसी व्यक्ति द्वारा किए गए आवेदन पर, उस पत्र की बाधत किसी लेखन या गणित सम्बन्धी भूल की परिणुद्धि कर सकेंगे किन्तु यह तब जब इससे सरकार या किसी ऐसे व्यक्ति को कोई वित्तीय हानि नहीं होती है।

28. अनियमित संवाहों की वसूली :—यदि किसी व्यक्ति को इन नियमों में जैसा उपबन्धित है उसके सिवाय व्याज के रूप में या अथवा किसी रकम का संदाय किया गया है तो उसका तुरन्त सरकार को प्रतिदाय किया जाएगा जिसमें असफल होने पर सरकार को, ऐसे व्यक्ति को सरकार द्वारा वदेय किसी रकम में से या भूराजस्व की बकाया के रूप में वसूल करने का हक होगा।

29. निर्वचन :—यदि इन नियमों के निर्वचन के संबंध में कोई प्रश्न उठता है तो उसे विनिश्चय के लिए केन्द्रीय सरकार को निदिष्ट किया जाएगा।

30. शिथिल करने की शक्ति :—जहाँ केन्द्रीय सरकार का समाधान हो जाता है कि इन नियमों के किसी उपबन्ध के प्रवर्तन में यथास्थिति पत्र के धारक को या उसके नामनिर्देशित या विधिकारि को असम्यक् कष्ट होता है, वहाँ वह कारणों को लेखबद्ध करके आदेश द्वारा उस उपबन्ध की अपेक्षाओं को, ऐसी रीति से जो अधिनियम के उपबन्धों से असंगत न हों, शिथिल कर सकेगी।

प्रकरण 1

[नियम 5, 9 और 15(1) देखिए]

सामाजिक सुरक्षा पत्र के क्रय के लिए आवेदन का प्रावप

डाकपाल

(1) में जो का/की पुत्र* पुत्री*/पत्नी* है। सामाजिक सुरक्षा पत्र के क्रय के लिए जिनका व्यौरा नीचे दिया गया है, आवेदन करना है और उनके अंकित मूल्य की रकम निश्चिन्त करता है।

निवासा का प्रावप	निश्चित रकम	अपेक्षित पत्र
		संख्या अभिधान कुल अंकित मूल्य
1	2	3 4 5

1. नकदी
2. बैंक, मांगदेय ड्राफ्ट प्रदायगी आदेश
3. डाक घर अथवा बैंक से प्रत्यक्ष रूप से लिए आवेदन
4. विनिधान के लिए परिपक्व पुराने पत्र भुनाने।

2. मैं घोषणा करता हूँ कि :—

(क) मैं सामाजिक सुरक्षा पत्र नियम, 1982 का पालन करने के लिए सहमत हूँ।

(ख) मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। (नीचे पैरा 6 देखें)

(ग) मैं 18 वर्ष से कम और 45 वर्ष से अधिक आयु का नहीं हूँ और मेरी जन्म की तारीख (तारीख, मास और वर्ष ईसवी सन में) है जिसके साक्ष्य स्वरूप मैं नीचे पैरा 7 की मूल में विनिर्दिष्ट दस्तावेज और उस दस्तावेज की एक ** प्रति हम के साथ संलग्न कर रहा हूँ।

(घ) मैंने इसके पूर्व कोई सामाजिक सुरक्षा पत्र नहीं किया है ; या

(ङ) उपरोक्त पैरा 1 में प्रावेधित पत्रों का सकल भ्रंशित मूल्य और अब तक पहले ही कय किए गए सामाजिक सुरक्षा पत्रों का, जिनका म्यौरा नीचे पैरा 6 में दिया गया है, अंकित मूल्य 5000 रु० से अधिक नहीं है और मैं सहमत हूँ कि किसी अन्य डाक सफल में रजिस्ट्रीकृत पत्र, यदि कोई है, आपके कार्यालय को अस्तित्व कर लिए जाएँ।

(च) मेरे जीवन के बीमे का कोई प्रस्ताव भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा अथवा डाकघर जीवन बीमा स्कीम के अस्तित्व कभी भी रद्द नहीं किया गया है।

*जो लागू हों, उसे काट दें।

**प्रति किसी राजपत्रित अधिकारी द्वारा तारीख सहित अनुप्रमाणित हो और उस पर उसके कार्यालय की मुद्रा लगाई जाए।

(अ) यथास्थिति, (ब) या (ङ) को काट दें।

नामनिर्देशन:

3. म, राष्ट्रीय बचतपत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6(1) के उपबंधों के अनुसार नीचे निम्नलिखित व्यक्ति (व्यक्तियों) को नाम निर्दिष्ट करता हूँ जो मेरी मृत्यु होने पर अन्य सभी व्यक्तियों को अप्रयोजित करते हुए, इस प्रावेदन द्वारा कय किए गए पत्र (पत्रों) के और उम/उन पर शोध्य रकम के हक्कार हो जाएँगे।

क्रम संख्या	नाम	नामनिर्देशनी का/ के म्यौरे
		पूरा पता अवयस्क की वशा में, नाम- निर्देशनी के जन्म की तारीख
(1)	(2)	(3)
(1)		
(2)		
(3)		
(4)		

उपरोक्त क्रम सं० का/के नामनिर्देशनी अवयस्क है/हैं। अतः मैं निम्नलिखित व्यक्तियों को नामनिर्देशनी/निर्देशितियों की अवयस्कता के दौरान अपनी मृत्यु हो जाने की वशा में उक्त पत्र/पत्रों पर शोध्य रकम

प्राप्त करने के लिए नियुक्त करता हूँ।

नामनिर्देशनी का नाम

नियुक्त किए गए व्यक्ति का नाम और पता

साक्षी :—

नाम साक्षी के

पता हस्ताक्षर

यदि नामनिर्देशन की आवश्यकता नहीं हो तो पैरा 3 को काट दें।

4. मुझे पहचान पत्रों की जरूरत है।

5. पत्र (और पहचान पत्रों) श्री/श्रीमती अधिकारी (प्राधिकार सं०) की या मेरे संदेशवाहक श्री/श्रीमती को जो यह प्रावेदन प्रस्तुत कर दे दिया जाए/दे दिए जाएँ।

हस्ताक्षर

(या अंगूठे का चिन्ह, यदि प्रावेदक निरक्षर है)

तारीख

6. यदि पहचान पत्रों की जरूरत नहीं है, तो काट दें। यदि पहचान पत्रों की जरूरत है तो प्रावेदक के नमूना हस्ताक्षर और पहचान चिन्ह नीचे पैरा 8 में निर्दिष्ट स्थान पर अवश्य दिए जाएँ।

7. यदि प्रावेदक स्वयं पहचान पत्रों और पत्र लेना चाहता है तो काट दें।

स्वास्थ्य की घोषणा :

6. मैं घोषणा करता हूँ कि :

(क) मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

(ख) पूर्ववर्ती तीन वर्ष की अवधि के दौरान मैं दमा, श्वसमिया, खून की उल्टी, यक्ष्मा, उच्च और निम्न रक्तचाप, स्मैटी उच्च मधुमेह, पीलिया, गुर्दे के किसी रोग, ग्रास्टेट ग्रंथि या मूत्र तंत्र, पक्षघात, उन्मत्तता, भ्रमस्मार, किसी भी प्रकार के दोरे या संविका विकार या मस्तिष्क या संविका के किसी अन्य रोग, कैंसर, कुष्ठ रोग, गठिया, ट्यूबर या रक्त रोग से पीड़ित नहीं रहा हूँ ; और

(ग) मैंने ऐसी कोई शल्य क्रिया नहीं कराई है जिसके परिणाम स्वरूप पिछले तीन वर्ष की अवधि के दौरान मुझे दस दिन की अवधि से अधिक के लिए अस्पताल में रहना पड़ा हो।

प्रावेदक का पूरा पता

प्रावेदक के हस्ताक्षर या अंगूठे का चिन्ह (यदि वह निरक्षर है)

तारीख

जन्म की तारीख का साक्ष्य :—

7. मूल दस्तावेज आवेदन : (i) (नगरपालिका विभाग, नगर-पालिका, पंचायत या अन्य सम्बद्ध निकाय जैसे किसी स्थानीय प्राधिकरण का नाम) द्वारा जारी किया गया जन्म का प्रमाण-पत्र।
- (ii) मैट्रिकुलेशन प्रमाणपत्र या समतुल्य अर्थात् (विनिर्दिष्ट करें)
- (iii) (विद्यालय, महाविद्यालय या अन्य शिक्षा संस्था का नाम और पता जिसमें आवेदक रखा है) द्वारा जारी किया गया प्रमाणपत्र।
- (iv) (जारी करने वाले अधिकारी का नाम और पता) द्वारा जारी किया गया कपितस्म प्रमाणपत्र
- (v) जीवन बीमा प्रीमियम की रसीद } जो जी० बी० नि० या डा०
- (vi) जीवन बीमा पालिसी } जी० बी० प्राधिकारियों द्वारा आवेदक को जारी किया गया है।
- (vii) जी० बी० नि० / डा० जीवन बीमा प्राधिकारियों द्वारा यथा स्वीकृत आवेदक की जन्म की तारीख उल्लेख करते हुए इनके द्वारा जारी किया गया पत्र
- (viii) आवेदक के नियोजक (नियोजक का नाम और पता) द्वारा रखे गए आवेदक के सेवा अभिलेख की सही प्रति/का उद्धरण जिसमें नियोजक द्वारा यथा स्वीकृत आवेदक की जन्म की तारीख और साथ ही नियोजक से यह उल्लेख करते हुए एक पत्र/प्रमाणपत्र (मूल रूप में) हो कि उसने मानक सञ्चय के आधार पर उक्त जन्म की तारीख स्वीकार कर ली है।

8. आवेदक द्वारा पहले कब किए गए वे समाजिक सुरक्षा पत्र जो इस आवेदन की तारीख पर परिपक्व नहीं हुए हैं या जिनका समय पूर्व निरीक्षण नहीं कर लिया गया है।

क्रम संख्या	पत्र की संख्या और तारीख	अंकित मूल्य रूप	रजिस्ट्रीकरण डाक घर का नाम
(1)	(2)	(3)	(4)
(1)			
(2)			
(3)			
(4)			

पहचान पत्रों के लिए

(लिस्टिंग)

आवेदक के पहचान चिन्ह,

(i)

(ii)

आवेदक के नमूना हस्ताक्षर

पत्र (पत्रों) की प्राप्ति :

उपरोक्त पैरा (1) में दिए गए व्योरे का पत्र और पहचान पत्रों प्राप्त की

आवेदक या उसके संदेश वाहक अधिकारी (प्राधिकार से) के हस्ताक्षर या प्रिंटेड का चिन्ह

यदि अपेक्षित न हों, तो काट दें

डाकघर में प्रयोग के लिए

आवेदन के समय आवेदक का आयु वर्ग :—

(क) 18—30 वर्ष

(ख) 31—35 वर्ष

(ग) 36—40 वर्ष

(घ) 41—45 वर्ष

पैरा 1 के प्रतिनिर्देश से जारी किए गए पत्रों की कुल संख्या निम्न प्रकार है :—

पत्र संख्या	निर्गम मूल्य	धुनाने की तारीख	डाकपाल के आधक्षर	टिप्पणियाँ (अन्त-रूप सूचक प्रति का जारी किया जाना आदि)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)

आवेदक का पहचानकर्ता

अन्य सक्षमों से पत्रों के अन्तर्गण के लिए कार्यवाई

डाकपाल के हस्ताक्षर

तारीख

यदि डाकपाल आवेदक को नहीं पहचानता है तो पहचानकर्ता का नाम और पता दिया जाए।

प्रश्न 2

[नियम 15 (1) देखिए]

भारतीय डाकघर विभाग

क्रम सं०

सरकारी कृत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6 के अधीन नाम-निर्देशन के लिए आवेदन का प्रश्न।

(यह प्रश्न, धारक द्वारा भरा जाएगा और उस कार्यालय के डाकपाल को, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत हैं, पत्रों सहित दिया जाएगा।)

सेवा में

डाकपाल,

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6(1) के उपबन्धों के अधीन में जो नीचे पैरा 3 में वर्णित सामाजिक सुरक्षा पत्रों का धारक हूँ इसके द्वारा वर्णित व्यक्ति/व्यक्तियों को, जो मेरी मृत्यु पर पत्र/पत्रों और उन पर देय राशि जो संदाय होनी है, का/के अन्य सभी व्यक्तियों को अपवर्णित करते हुए हकदार होगा/होंगे, नामनिर्देशित करना हूँ। मैं इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि मैंने इन पत्रों की बाबत अब तक कोई नामनिर्देशन नहीं किया है। पत्र संलग्न हैं।

क्रम सं० नामनिर्देशितों का नाम पूरा पता अवयस्क की दशा में नामनिर्देशितों के जन्म की तारीख

2 उपर्युक्त क्रम सं० पर नामनिर्देशितों अवयस्क है/हैं, मैं निम्नलिखित व्यक्ति(यों) को, नामनिर्देशितों/नामनिर्देशितियों की अवयस्कता के दौरान मेरी मृत्यु हो जाने की दशा में उस पर देय राशि को वसूल करने वाले व्यक्ति के रूप में नियुक्त करता हूँ।

नाम निर्देशितों का नाम नियुक्त किए गए व्यक्ति का नाम और पता

नीचे वर्णित पत्र संलग्न हैं पत्रों का क्रम संख्यांक अभिधान जारी करने की तारीख जारी करने वाला कार्यालय

भवदीय

पता

(निरक्षर धारक की दशा में, उसके और उसके पिता का नाम दिया जाना चाहिए।)

साक्षी धारक के हस्ताक्षर (भंगूटे का चिन्ह यदि निरक्षर हो)

नाम

(1)

पता

नाम(2)

पता

ध्यान दीजिए—निरक्षर धारकों की दशा में साक्षी वे व्यक्ति होंगे जिनके हस्ताक्षर डाकघर में हैं।

नामनिर्देशन को स्वीकार करने वाले डाकपाल का आदेश

डाकघर की

माँख सहित मुहर

प्रधान/उप डाकपाल के हस्ताक्षर

1463GI/81-2

प्रारूप 3

[नियम 15 (2) देखिए]

भारतीय डाक तार विभाग

क्रम संख्यांक

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6 के अधीन बचत पत्रों की बाबत पूर्वतन किए गए नामनिर्देशन के रद्दकरण या उसमें परिवर्तन के लिए आवेदन का प्रारूप।

(यह प्रारूप धारक द्वारा भरा जाएगा और उस कार्यालय के डाकपाल को, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है पत्र सहित दिया जाएगा।)

सेवा में

डाकपाल

डाक टिकटों के लिए स्थान

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1969 की धारा 6 (1) के उपबन्धों के अधीन में, जो नीचे पैरा 3 में वर्णित सामाजिक सुरक्षा पत्रों का धारक हूँ इसके द्वारा इन पत्रों, जो आपके कार्यालय में संख्यांक के अधीन रजिस्ट्रीकृत हैं, की बाबत अपने द्वारा किए गए पूर्वतन नामनिर्देशन को रद्द करता हूँ।

*रद्द किए गए नामनिर्देशन के स्थान पर मैं निम्नवर्णित व्यक्ति/व्यक्तियों को नामनिर्दिष्ट करता हूँ जो मेरी मृत्यु पर अन्य सभी व्यक्तियों को अपवर्णित करते हुए पत्र/पत्रों और उन पर देय राशि जो संदाय होनी है का/के हकदार होगा/होंगे।

क्रम सं० नामनिर्देशितों/नामनिर्देशितियों पूरा पता अवयस्क की दशा में नामनिर्देशितों के जन्म की तारीख का/के नाम

*केवल परिवर्तन करने की दशा में भरा जाएगा।

2. उपर्युक्त क्रम संख्यांक पर नामनिर्देशितों अवयस्क है/हैं मैं निम्नलिखित व्यक्तियों को नामनिर्देशितों/नामनिर्देशितियों की अवयस्कता के दौरान मेरी मृत्यु हो जाने की दशा में, उस पर देय राशि को वसूल करने वाले व्यक्ति के रूप में नियुक्त करता हूँ।

नाम निर्देशितों नियुक्त किए गए व्यक्ति का नाम का नाम और पता

3. नीचे वर्णित पत्र संलग्न हैं।

पत्रों का क्रम संख्यांक अभिधान जारी करने की तारीख जारी करने वाला कार्यालय

पता:

भवदीय

(निरक्षर धारक की दशा में उसका और धारक के हस्ताक्षर उसके पिता का नाम दिया जाना चाहिए) (यदि निरक्षर हो तो भंगूटे का चिन्ह)

साक्षी:

नाम (1)

पता

नाम (2)

पता

ध्यान दीजिए—निरक्षर धारकों की दशा में साक्षी के व्यक्ति होने
जिनके हस्ताक्षर डाकघर में हैं।

नामनिर्देशन को स्वीकार करने वाले
डाकपाल का आवेदन
डाकघर की तारीख
सहित मुहर

प्रारूप 4

[नियम 18 (2) और 21 (2) देखिए]

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती कुमारी
(नाम, उपनाम सहित, यदि कोई है और पूरा पता)

की मरु (स्थान और जिला)
(तारीख इसकी मरु में) को हुई। उसकी
मरु यहाँ पर प्राकृतिक कारण (कारणों) को विनिर्दिष्ट करें। बाह्य, हिंसात्मक और दूष्य
साधनों से हुई दुर्घटनाओं को, जिनके अंतर्गत रेल और सड़क दुर्घटनाओं,
विधुन्मरण, सर्पदंश, डूबना, अग्नि और किसी वष्य प्राणी द्वारा आक्रमण
की है, अप्राकृतिक कारणों के रूप में माना जाएगा। से जो अप्राकृतिक
कारण है (हैं) किन्तु आत्म-हत्या या आत्म-हत्या नहीं है, हुई।

स्थान कार्यालय की जिला कलेक्टर या जिला मजिस्ट्रेट के
तारीख मुहर हस्ताक्षर

[फा० सं० 3/5/81- एम० एम० (1)]

ए० सी० तिवारी, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

NOTIFICATIONS

New Delhi, the 20th March, 1982

G.S.R. 259(E).—In exercise of the powers conferred by section 12 of the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title, commencement and application.—(1) These rules may be called the Social Security Certificates Rules, 1982.

(2) They shall come into force on the 1st day of June, 1982.

(3) They shall apply to the Social Security Certificates.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires—

(i) "Act" means the Government Saving Certificates Act, 1959 (46 of 1959) ;

(ii) "Certificate" means the Social Security Certificate ;

(iii) "postal Circle" means the post offices under the administrative authority of a Postmaster General or the Director, Army Postal Services.

(iv) "co-operative society" means a society registered or deemed to have been registered under the Co-operative Societies Act, 1912 (2 of 1912) or under any other law for the time being in force ;

(v) "Corporation" means a corporation established by or under any law for the time being in force, but does not include a company ;

(vi) "Form" means a form appended to these rules ;

(vii) "Government company" means a company as defined in section 617 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956) ;

(viii) "Identify slip" means an identity slip issued to a holder of a certificate under rule 11 ;

(ix) "local authority" means a municipal corporation, municipal committee, district board, body of port commissioners or other authority legally entitled to or entrusted by the Government with the control or management of a municipal or local fund ;

(x) "old certificate" means a certificate issued under the Post Office Savings Certificates Rules, 1960, or the National Savings Certificates (First Issue) Rules, 1965, or the National Savings Certificates (IV Issue) Rules, 1970, or the National Savings Certificates (V Issue) Rules, 1973, or the National Savings Annuity Certificates Rules, 1976, or the National Savings Certificates (VI Issue) Rules, 1981, or the National Savings Certificates (VII Issue) Rules, 1981, or a Bond issued under the National Development Bonds Rules, 1977 ;

(xi) "post office" means any post office in India doing Savings Bank work.

3. Denominations in which certificates shall be issued.—The certificates shall be issued in denominations of Rs. 500 and Rs. 1000.

4. Maturity period.—The maturity period of a certificate shall be 10 years from the date of issue of certificate under rule 8.

5. Procedure and conditions for purchase of certificate.—A certificate may be purchased by any person in his name by presenting at a post office on or after the 1st day of June, 1982, an application in Form I (obtained free of cost at all post offices) either in person or through an authorised agent of small savings schemes, subject to the following conditions, namely :—

(a) The applicant shall as on the date of presentation of his application to the post office, be not less than 18 years of age and not more than 45 years of age.

Explanation.—For the purpose of this clause, any of the following documents stating the applicant's date of birth shall be accepted as proof of age, namely :—

(i) certificate of birth issued by the local authority concerned ;

(ii) matriculation certificate or equivalent thereto ;

(iii) certificate issued by a recognised school, college or other educational institution ;

(iv) certificate of baptism ;

(v) life insurance policy or the first receipt for life insurance premium where the date of birth therein has been shown as admitted by the Life Insurance Corporation of India or the Postal Life Insurance authorities, or a letter issued by the said Corporation or authorities.

(vi) service record kept by employer provided the employer has accepted the applicant's date of birth ;

(b) the applicant shall be in good health and shall not, during the period of three years preceding the date of application, have suffered from asthma, pneumonia, spitting of blood, tuberculosis, high or low blood pressure, rheumatic fever, diabetes, jaundice, any disease of kidney, prostate or urinary system, paralysis, insanity, epilepsy fits of any kind or nervous breakdown or any other disease of the brain or nervous system, cancer, leprosy, rheumatism, tumour, or venereal disease, or undergone any surgical operation which has resulted in the applicant's hospitalisation for more than ten days ;

(c) where a proposal of insurance on the applicant's life has been made at any time to the Life Insurance Corporation of India or under the Postal Life Insurance

rejected by the said Corporation or under the said scheme ;

- (d) the application in Form 1 shall be complete in all respects and shall be accompanied by the documents as specified in the said Form and bear the signature of the applicant or his thumb-impression, if he is illiterate, which shall be affixed by him in the presence of an authorised person and no addition, deletion or modification in any manner shall be made in the declarations contained in the said Form save as otherwise directed therein.

Explanation.—For the purpose of this clause, “authorised person” means the Postmaster of the post office at which the application is presented, or any other official of the post office as may be authorised in this behalf by the Director General, Posts and Telegraphs, or an authorised agent of small savings scheme ;

- (e) the application shall be accompanied by payment of face value of the certificate applied for ;
(f) details of any certificate already purchased under these rules by the applicant shall be furnished by him.

6. Limit on holding of certificates.—No person shall purchase or hold at any time certificates for an aggregate face value which exceeds Rs. 5000.

Explanation.—For the purposes of this rule—

- (a) any certificate held beyond its maturity period by such person shall be ignored.
(b) any certificate pledged by such person under rule 13 shall be taken into account.

7. Legal tender.—Payment for the purchase of a certificate may be made to a post office in any of the following modes, namely :—

- (i) cash ;
(ii) a cheque, pay order or demand draft ;
(iii) duly signed withdrawal from together with the pass book for withdrawal from the post office savings account ;
(iv) surrender of a matured old certificate duly discharged as follows “Received payment through issue of fresh certificate vide application attached”.

8. Issue of certificates.—(1) On payment being made under rule 7, except where payment is made by a cheque, pay order or demand draft, a certificate shall normally be issued, immediately, and the date of such certificate shall be the date of such payment.

(2) Where payment for the purchase of a certificate is made by a cheque, pay order or demand draft, the certificate shall not be issued before the proceeds of the cheque, pay order or demand draft, as the case may be, are realised and the date of such certificate shall be the date of encashment of the cheque, pay order or demand draft, as the case may be.

(3) If for any reason a certificate cannot be issued immediately, a provisional receipt shall be given to the purchaser which may later be exchanged for a certificate and the date of such certificate shall be as specified in sub-rule (1) or sub-rule (2), as the case may be.

9. Certificate in lieu of proceeds of old certificate.—A holder of an old certificate entitled to encash that certificate may make an application in Form one for the issue of a certificate under these rules and on receipt of such application, there shall be issued to the applicant a certificate under these rules, the date of issue being the date on which the old certificate duly discharged is presented.

10. Irregular holding.—Any certificate purchased or acquired in contravention of these rules shall be encashed by the holder as soon as the fact of the holding being in contravention of these rules is discovered and no interest shall be paid on any holding in contravention of these rules.

11. Identity slip.—(1) If a request for the issue of an identity slip is made at any time by the holder of a certificate to the post office where the certificate stands registered, an identity slip shall be issued to such holder on his signing the identity slip.

(2) The identity slip shall be surrendered at the time of the final discharge of the certificate or in case of its loss, a declaration of such loss shall be furnished to the post office in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs.

12. Transfer from one post office to another.—(1) A certificate may, during its maturity period, be transferred from a post office at which it stands registered, to any other post office on the holder making an application in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs, at either of the two post Offices.

Provided that where a person holds more than one certificate and their maturity period has not expired, all such certificates shall be registered in a Post Office or post offices in the same postal circle.

13. Pledging of certificate.—(1) The Postmaster of the office where a certificate stands registered may permit transfer of the certificate for being pledged as security to—

- (a) the President of India or Governor of a State in his official capacity ;
(b) the Reserve Bank of India or a scheduled bank or a co-operative society including a co-operative bank ;
(c) a corporation or a Government company ; and
(d) a local authority ;

Provided that an application for such transfer is made by the holder of the certificate and the pledge in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs.

(2) When any certificate is transferred under sub-rule (1), the Postmaster of the office where the certificate stands registered shall make the following endorsement on the certificate, namely :—

“Transferred as security to.....”.

(3) Except as otherwise provided in these rules, the pledgee of a certificate under this rule shall, until it is re-transferred under sub-rule (4), be deemed to be the holder of the certificate.

(4) A certificate transferred under sub-rule (2), may, on the written authority of the pledgee, be re-transferred with the previous sanction in writing of the authorised Postmaster and when any such re-transfer is made, the Postmaster of the office where the certificate stands registered shall make the following endorsement on the certificate :—

“Re-transferred to.....”.

Note 1.—A gazetted officer of the Government accepting the certificate as security under sub-rule (1) or releasing the pledge under sub-rule (4) on behalf of the President or the Governor of a State, shall certify that he is duly authorised under article 299 of the Constitution to execute such instruments or deeds on behalf of the President or the Governor of the States giving the particulars of the number and date of the notification of the Government authorising him in this behalf.

Note 2.—An officer of the Reserve Bank of India or a scheduled bank or a co-operative society including a co-operative bank, a corporation or a Government company or a local authority, as the case may be, accepting the certificate as security under sub-rule (1) or releasing the pledge under sub-rule (4) on behalf of the respective institution, shall certify under his dated signature and seal of office that he is duly authorised under the articles of the said institution, to execute such instruments or deeds on its behalf.

(5) Where as a result of several endorsements made under sub-rule (2) and (4) on a certificate, no space is left for making further endorsements of a like character on that certificate,

a fresh certificate may be issued by the Postmaster of the office of registration in lieu of such certificate.

(6) A fresh certificate issued under sub-rule (5) shall be treated as equivalent to the certificate in lieu of which it has been issued for all the purposes of these rules.

14. Replacement of lost or destroyed certificate.—(1) if a certificate is lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced, the person entitled thereto may apply for the issue of a duplicate certificate to the post office, where the certificate is registered or at any other post office in which case the application will be forwarded to the post office where the certificate stands registered.

(2) Every such application shall be accompanied by—

(a) a statement showing particulars, such as, number, amount and date of the certificate and the circumstances attending such loss, theft, destruction, mutilation or defacement ;

(b) identity slip, if any.

(3) If the officer in charge of the post office where the certificate stands registered is satisfied of the loss, theft, destruction, mutilation or defacement of the certificate, he shall issue a duplicate certificate on the applicant's furnishing an indemnity bond in the form laid down by the Director General, Posts and Telegraphs with one or more approved sureties or with a bank's guarantee ;

Provided that where the certificate lost, stolen destroyed, mutilated or defaced is of the denomination of Rs. 500, a duplicate certificate or certificates may be issued on the applicant furnishing an indemnity bond without any such surety or guarantee ;

Provided further that where such application is made with respect to a certificate mutilated or defaced, of whatever face value, a duplicate certificate may be issued without any such indemnity bond, surety or guarantee, if the certificate mutilated or defaced and the identity slip, if any, are surrendered and the certificate is capable of being identified as the one originally issued.

(4) A duplicate certificate issued under sub-rule (3) shall be treated as equivalent to the original certificate for all the purposes of these rules except that it shall not be encashable at a post office other than the post office at which such certificate is registered without previous verification.

15. Nomination.—(1) Subject to the provisions of sub-rules (2) to (4), the holder of a certificate may, by filling in necessary particulars in Form 1 at the time of purchasing the certificate, nominate any person or persons who, in the event of death of the holder shall become entitled to the certificate and to the payment of the amount due thereon. If such nomination is not made at the time of purchasing the certificate, it may be made by the holder at any time after the purchase of the certificate but before its maturity, by submitting an application in Form 2, together with the certificate to the Post master of the office where the certificate stands registered.

(2) A nomination made by the holder of a certificate under this rule may be cancelled or varied by submitting an application in Form 3, together with the certificate, to the Postmaster of the post office at which the certificate stands registered.

(3) Separate applications for nomination or cancellation of a nomination or variation of a nomination shall made in respect of certificates registered on different dates.

(4) The nomination or the cancellation of a nomination or the variation of a nomination shall be registered in the Head Post Office concerned and the fact of registration shall be noted on the certificate and on such registration, the said nomination or cancellation or variation of nomination, as the case may be, shall be deemed to be effective from the date on which it was presented.

16. Payment on maturity.—On the expiry of the maturity period of a certificate, its holder or, in the event of his death, his nominee, or if there is no surviving nominee, the legal heir of the holder, as the case may be, shall be entitled to receive a sum inclusive of interest of Rs. 1500 if the

certificate, is of the denomination of Rs. 500 or Rs. 3000 if the certificate is of the denomination of Rs. 1000 and such interest shall accrue at the end of each year as specified in the Table below and the interest so accruing at the end of each year upto the end of the ninth year shall be deemed to have been reinvested on behalf of the holder and aggregated with the amount of face value of the certificate.

TABLE

The year for which interest accrues	Amount of interest (Rs.) accruing on certificate of denomination of	
	Rs. 500	Rs. 1000
1	2	3
First year	58.06	116.12
Second year	64.80	129.60
Third year	72.33	144.66
Fourth year	80.73	161.46
Fifth year	90.10	180.20
Sixth year	100.57	201.14
Seventh year	112.24	244.48
Eighth year	125.28	250.56
Ninth year	139.83	279.66
Tenth year	156.06	31.12

17. Premature encashment.—(1) Notwithstanding anything contained in rule 16, a certificate may, at the option of the holder, be prematurely encashed at a discount at any time after the expiry of three years from the date of issue of the certificate and on such encashment, the amount payable to him shall be equivalent to the face value of the certificate together with simple interest thereon for the complete years and months for which the certificate has been held. Such interest shall be calculated at the rate applicable as on the date of encashment to savings accounts of the category of single accounts in the Post Office Savings Bank. The difference between the aforesaid simple interest and the interest accrued under rule 16 shall be deemed to be the discount.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1) and rule 16 and subject to sub-rules (3) and (4), a certificate may be prematurely encashed before the expiry of three years—

- on forfeiture by a pledge of the certificate, when the pledge is in conformity with these rules, or
- when ordered by a court of law.

(3) If a certificate is encashed under sub-rule (2) within a period of one year from the date of the certificate, only the face value of the certificate shall be payable and no interest shall be payable.

(4) If a certificate is encashed under sub-rule (2) after the expiry of one year but before the expiry of three years from the date of the certificate, the encashment shall be at a discount and the amount payable and discount shall be as specified in sub-rule (1).

18. Payment in the event of death of the holder during maturity period.

(1) Subject to rule 21 and sub-rules (2), (3) and (4), on the death of the holder of a certificate—

- due to any cause, at any time after the expiry of two years from the date of issue of the certificate and before the expiry of its maturity period, or
- due to one or more non-natural causes at any time before the expiry of two years from the date of issue of the certificate,

the nominee, or, if there is no surviving nominee, the legal heir of the holder, as the case may be, shall be entitled to receive, in respect of each such certificate held by the deceased holder, payment of a sum of Rs. 1500 or Rs. 3000 according to the denomination of the certificate of Rs. 500 or Rs. 1000, as the case may be.

Explanation.—For the purpose of clause (b), 'non-natural causes' shall mean accidents due to external, violent and visible means and shall include rail and road accidents, electrocution, snake-bite, drowning, fire and attack by wild animal but shall not include self-injury and suicide.

(2) If a doubt arises as to whether the death of the holder was or was not due to a non-natural cause other than self-injury or suicide, the certificate in Form 4 by the district collector or the district magistrate in whose jurisdiction the place of death falls shall be deemed final.

(3) Payment under sub-rule (1) shall be restricted to the certificates held by a deceased holder upto a maximum limit of aggregate face value of Rs. 5000 and in respect of any certificate held in excess of such limit by the deceased holder and not matured as on the date of his death, the face value of such certificate shall be payable only on the expiry of its maturity period without any interest to the nominee or legal heir of the holder, as the case may be :

Provided that such face value shall be payable immediately without any interest if the certificate is presented for encashment—

- (i) on forfeiture by a pledgee of the certificate when the pledge is in conformity with these rules, or
- (ii) when ordered by a court of law.

(4) In case it is found that there has at any stage been a fraudulent mis-statement or suppression of information relating to the date of birth of the holder or any other material fact relevant to the issue of the certificate or payment thereon, the face value of such certificate shall be payable only on the expiry of its maturity period without any interest to the nominee or legal heir of the holder as the case may be :

Provided that such face value shall be payable immediately without any interest if the certificate is presented for encashment—

- (i) on forfeiture by a pledgee of the certificate when the pledge is in conformity with these rules, or
- (b) when ordered by a court of law.

Explanation.—For the purpose of this sub-rule, if a question arises as to whether there has been a fraudulent mis-statement or suppression of information relating to the date of birth of the holder or any other material fact relevant to the issue of the certificate or payment thereon, the decision of the Central Government in this regard shall be final.

(5) In cases not covered by clause (b) of sub-rule (1), on the death of the holder of a certificate at any time before the expiry of two years from the date of the certificate, the nominee or if there is no surviving nominee, the legal heir of the holder, may, at his option—

- (i) encash the certificate on the expiry of its maturity period, in which case he shall be entitled to receive a sum of Rs. 1500 or Rs. 3000 according to the denomination of the certificate of Rs. 500 or Rs. 1000, as the case may be; or
- (ii) encash the certificate at any time before the expiry of its maturity period, in which case he shall be entitled to receive a sum equivalent to the face value of the certificate together with interest as specified in sub-rule (1) of rule 17; provided that no such interest shall be payable if the certificate is encashed before the expiry of one year from the date of the certificate.

19. Place of encashment.—A certificate shall be encashable at the post office at which it stands registered :

Provided that a certificate may be encashed at any other post office if the officer-in-charge of that post office is satisfied on production of identity slip or on verification from the office of its registration that the person presenting the certificate for encashment is entitled thereto.

20. Discharge of certificate.—(1) The person entitled to receive the amount due under a certificate shall, on its en-

cashment, sign on the back thereof in token of having received the payment.

(2) A certificate of discharge may be issued by the post office to any person encashing a certificate.

21. Claims of nominees or legal heirs.—(1) For the purpose of claiming payment of the amount due under rule 16 or 18, as the case may be, the nominee or legal heir of the holder shall make an application to the Post-master of the office where the certificate stands registered and such application shall be accompanied by—

- (i) certificate on which payment is claimed;
- (ii) proof of death of the holder of the certificate ;
- (iii) proof of death of deceased nominee, if any ;
- (iv) death certificate in Form 4 signed by the district collector or the district magistrate, in cases covered by clause (b) of sub-rule (1) of rule 18.

(2) If there are more than one nominee or legal heir as the case may be, they shall give a joint discharge of the certificate at the time of receiving payment.

(3) When the nominee is a minor, the person appointed under sub-section (3) of section 6 of the Act, while encashing the certificate, shall certify that the minor is alive and the money is required on behalf of the minor.

(4) For the purposes of sub-section (4) of section 7 of the Act, the authorities named below shall be competent to sanction claims upto the limit noted against each on the death of the holder of the certificate, without production of the probate of his will or letters of administration of his estate or succession certificate granted under the Indian Succession Act, 1925 (39 of 1925) :—

Name of authority	Limits
1	2
	Rs.
(i) (a) Non-Gazetted Head Postmaster and sub-Post master in Higher Selection Grade.	500
(b) Deputy Postmaster in Higher Selection Grade and Assistant Presidency Postmaster in Higher Selection Grade.	
(ii) Deputy Postmaster in Group 'B' and Deputy Presidency Postmaster	2,000
(lii) (a) Group 'A' or Group 'B' Postmaster/Presidency Postmaster and Superintendent of Post Offices, Senior Superintendent of Post Offices.	5,000
(b) Heads of Postal Circles (Assistant Director/Assistant Postmaster General)	

22. Encashment of certificate held by Army, Air Force and Navy Personnel.—Where a certificate is held by a person who is subject to the Army Act, 1950 (46 of 1950) or the Air Force Act, 1950 (45 of 1950) or the Navy Act, 1957 (62 of 1957) and such person dies or deserts, the Commanding Officer of the Corps, department, detachment, unit or ship to which the deceased or deserter belonged or the Committee of Adjustment, as the case may be, may send requisition to the officer in charge of the post office where the certificate stands registered to pay to him or it, the amount due under the certificate and the officer in charge of the post office shall be bound to comply with such requisition even though there is in force at the time of death or desertion of holder of the certificate a nomination made in favour of any person.

Explanation.—The aforesaid requisition must be made under section 3 or section 4 of the Army and Air Force (Disposal of Private Property) Act, 1950 (40 of 1950), in the case of a person belonging to the Army or the Air Force, or under section 171 or section 172 of the Navy Act, 1957 (62 of 1957) in the case of a person belonging to the Navy.

23. Conversion from one denomination to the other.—(1) On an application being made in this behalf by the holder, certificates of lower denomination may be exchanged for a certificate or certificates of higher denomination of the same aggregate face value or a certificate of higher denomination may be exchanged for certificates of lower denomination of the same aggregate face value :

Provided that certificates bearing different dates shall not be combined for being exchanged for certificate or certificates of higher denomination.

(2) The date of the certificate or certificates issued in exchange shall be the same as that of the original certificate or certificates surrendered and not the date on which the exchange is made.

24. Income-tax.—Interest on the certificates shall be liable to tax under the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), on the basis of the annual accrual specified in rule 16, but no tax shall be deducted at the time of payment of discharge value :

Provided that any amount payable to a nominee or legal heir of a holder under sub-rule (1) of rule 18 shall not be liable to such tax.

25. Fees.—(1) A fee of two rupees shall be chargeable in respect of the following transactions, namely :—

- (i) transfer of certificate under rule 13;
- (ii) issue of a duplicate certificate under sub-rule (3) of rule 14;
- (iii) issue of a certificate of discharge under sub-rule (2) of rule 20;
- (iv) conversion from one denomination to another under rule 23;

Explanation.—(1) Where certificate of discharge is issued in respect of certificates purchased on different applications, the fee under clause (iii) shall be separately charged in respect of each such application.

(2) The fee to be charged for a conversion under clause (iv) shall be based on the number of certificates required to be issued on such conversion.

2. A fee of one rupee shall be chargeable on every application for registration of nomination, or of any variation in nomination or cancellation thereof ;

Provided that no fee shall be charged on an application for registration of the first nomination.

26. Responsibility of the Post Office.—The post office shall not be responsible for any loss caused to a holder by any person obtaining possession of a certificate and fraudulently encashing it.

27. Rectification of mistakes.—The Director General, Posts and Telegraphs, or the Postmasters General or Heads of Postal Divisions in their respective jurisdictions, may either suo moto or upon an application by any person interested in any certificate issued in pursuance of these rules, rectify any clerical or arithmetical mistakes with respect to that certificate if it does not involve any financial loss to the Government or to any such person.

28. Recovery of irregular payments.—If any amount has been paid as interest or otherwise to any person save as provided in these rules, it shall be forthwith refunded to the Government failing which the Government shall be entitled to recover the amount from any money payable by the Government to such person or as an arrear of land revenue.

29. Interpretation.—If any question arises relating to the interpretation of these rules, it shall be referred to the Central Government for a decision.

30. Power to relax.—Where the Central Government is satisfied that the operation of any of the provisions of these rules causes undue hardship to the holder of a certificate or his nominee or legal heir, as the case may be, it may, by order, for reasons to be recorded in writing, relax the requirements of that provision in a manner not inconsistent with the provisions of the Act.

FORM 1

[See rules 5, 9 and 15(1)]

FORM OF APPLICATION FOR PURCHASE OF SOCIAL SECURITY CERTIFICATES

To

The Postmaster,.....

I,.....son*/daughter*/wife* ofhereby apply for the purchase of Social Security Certificates as detailed below and tender the amount of their face-value.

Form of tender	Amount tendered (Rs.)	Certificates required		
		Number (Rs.)	Denomination	Total Face value
1	2	3	4	5
(i) Cash				
(ii) Cheque, demand draft or pay order				
(iii) Application for withdrawal from Post Office Savings Bank.				
(iv) Matured old certificate(s) for investment.				
Total :				

DECLARATIONS:

2. I hereby declare—

- (a) that I agree to abide by the Social Security Certificates Rules, 1982;
- (b) that I am of good health (see paragraph 6 below);
- (c) that I am not less than 18 years, and not more than 45 years of age and my date of birth is.....(day, month and year in Christian era) in evidence of which attach the document specified at Item.....of paragraph 7 below together with a copy** of that document;
- @(d) that I have not previously purchased any Social Security Certificate;

OR

- @(e) that the aggregate face value of certificates applied for in paragraph 1 above and the Social Security Certificates already purchased so far, detailed in paragraph 8 below does not exceed Rs. 5000 and I agree that the certificates registered in other postal circles, if any, may be transferred to your office;
- (f) that no proposal of insurance on my life has been rejected at any time by the Life Insurance Corporation of India or under the Postal Life Insurance Scheme.

NOMINATION :

££3. Under the provisions of section 6(1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I hereby nominate the person(s) mentioned below who shall, on my death, become entitled to the certificate(s) purchased through this application and the amount due thereon to the exclusion of all other persons :

*Cross out, if not applicable.

**Copy must be attested by a gazetted government officer with date and seal of his office affixed.

@ Cross out (d) OR (e), as the case may be.

££Cross out paragraph 3, if nomination is not required.

Serial Number	Details of nominee		
	Name	Full Address	Date of birth, if nominee is minor
.....
.....
.....

As the nominee(s) at Serial Nos. above is/are minor(s), I appoint the following persons to receive the amount due on the said certificate(s) in the event of my death during the minority of the nominee(s).

Name of nominee	Name and address of person appointed
.....
.....

Witness :

Name	Signature
Address	of witness,

4. I require identity slip.

5. The certificate(s) (and identity slip 2) may be made over to Shri/Smt. agent (Authority No.) or to my messenger Shri/Smt. presenting this application.

DECLARATION OF HEALTH

6. I hereby declare—

(a) that I am of good health.

(b) that during the last three years I have not suffered from asthma, pneumonia, splitting of blood, tuberculosis, high or low blood pressure, rheumatic-fever, diabetes jaundice, any disease of kidney, prostate or urinary system, paralysis, insanity, epilepsy, fits of any kind or nervous break down or any other disease of the brain or nervous system, cancer, leprosy, rheumatism, tumour or venereal disease; and

2 Cross out, if identity slip is not required. For identity slip if required, applicant's specimen signature and marks of identification must be furnished in the space below paragraph 8.

3 Cross out, if the certificates and identity slip (where required) are to be received by the applicant personally.

(c) that I have not undergone any surgical operation which has resulted in my hospitalisation for more than ten days during the last three years.

Full address of applicant: .. Signature (or thumb impression if illiterate) of applicant.

..... Date,

EVIDENCE OF DATE OF BIRTH

7. (i) Certificate of birth issued by local Origin document to be returned to the applicant. (name of Municipal Corporation, Municipality, Panchayat or other body concerned).

(ii) Matriculation Certificate or equivalent, namely, (to be specified).

(iii) Certificate issued by (name and address of school, college or other educational institution attended by the applicant.).

(iv) Certificate of baptism issued by (Name and address of the issuing authority.)

(v) Receipt for Life Insurance Premium } Issued to the applicant by LIC or PLI authorities.

(vi) Life Insurance Policy }

(vii) Letter issued to the applicant by the LIC/Postal Life Insurance Authorities stating his date of birth as accepted by them.

Not to be returned (viii) True copy/extract of the applicant's service record kept by his employer..

..... (name and address of the employer) stating the applicant's date of birth as accepted by the employer; along with a letter/certificate (in original from the employer stating that he has accepted the said date of birth on the basis of standard proof.

8. Social Security Certificates previously purchased by the applicant and not matured or prematurely discharged as on the date of this application :

Sl. No.	Certificate Number and date	Face Value (Rs.)	Name of Post Office where registered.
1	2	3	
(i)			
(ii)			
(iii)			
(iv)			

FOR IDENTITY SLIP

Marks of identification of applicant

(i) Specimen Signature of applicant

(ii)

RECEIPT OF CERTIFICATE(S)

Received the certificate(s) detailed at paragraph 1 above and **identity slip.

**Cross out if not required. Signature or thumb impression of applicant or his messenger/agent (Authority No.) Date,

FOR USE OF POST OFFICE

Age group of applicant at the time of application :

A 18—30 years

B 31—35 years

C 36—40 years

D 41—45 years

Total number of certificates issued as follows with reference to paragraph 1 :

Certificate Number	Issue Price (Rs.)	Date of encashment	Initials of post-master	Remarks (transfer, issue of duplicate, etc.)
.....				
.....				
.....				
.....				
.....				

Identifier of applicant*.....

Action for transfer of certificates from other circles.....

Date..... Signature of Postmaster.

*Name and address of identifier to be given, if the applicant is not known to the Postmaster.

FORM 2

[See rule 15(1)]

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

Serial No.....

FORM OF APPLICATION FOR NOMINATION UNDER SECTION 6 OF THE GOVERNMENT SAVINGS CERTIFICATES ACT, 1959.

(This form will be filled in by the holder and submitted with the certificates to the Postmaster of the office where the certificates stand registered).

To

The Postmaster,

Under the provisions of section 6(1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I.....the holder of Social Security Certificates detailed in para 3 below, hereby nominate the person(s) mentioned below, who shall, on my death, become entitled to the certificate(s) and to be paid the sum due thereon to the exclusion of all other persons. I hereby declare that I have not so far made any nomination in respect of these certificates. The certificates are enclosed.

Sl No.	Name of the Nominee	Full address	Date of birth of nominee in case of minor
.....			
.....			
.....			
.....			
.....			

2. As the nominee(s) at serial No(s) above is/are minor(s), I appoint the following person(s) to receive the sum due thereon in the event of my death during the minority of the nominee(s).

Name of nominee	Name and address of person appointed.
.....	
.....	
.....	
.....	
.....	

3. The Certificates detailed below are enclosed.

Sl. No. of Certificate	Denomination	Date of Issue	Office of issue
.....			
.....			
.....			
.....			
.....			

Address :

Yours faithfully,

(In case of illiterate holder, his name and his father's name should be given).

Signature (or thumb impression, if illiterate) of holder.

Witnesses-----

Name }
Address } (1)

Name }
Address } (2)

N.B.—In the case of illiterate holders, the witnesses shall be persons whose signatures are known to the Post Office.

Order of the Postmaster accepting the nomination.

Date stamp
of
Post Office

Signature of Head/Sub-Post-Master.

FORM 3

[See rule 15(2)]

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

Serial No.....

FORM OF APPLICATION FOR CANCELLATION OR VARIATION OF NOMINATION PREVIOUSLY MADE IN RESPECT OF SAVINGS CERTIFICATES UNDER SECTION 6 OF THE GOVERNMENT SAVINGS CERTIFICATES ACT, 1959.

(This form will be filled in by the holder and submitted with the certificate to the Postmaster of the office where the certificate stands registered.).

To

The Postmaster,

space for
postage
stamps

Under provisions of section 6(1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I.....the holder of Social Security Certificates detailed in para 3 below, hereby cancel the nomination previously made by me in respect of these certificates and registered in your office under No.....dated.....

*In place of the cancelled nomination, I hereby nominate the person(s) mentioned below, who shall, on my death, become

entitled to the Certificate(s) and to be paid the sum due thereon to the exclusion of all other persons ;

Sl. No.	Name of the nominee	Full address	Date of birth of nominee in case of minor

N.B.—In case of illiterate holders, the witnesses shall be person whose signatures are known to the Post Office.

Date stamp of Post Office Order of the Postmaster accepting cancellation/variation of nomination.

Signature of Head/Sub-Postmaster.

FORM 4

[See rule 18(2) and 21(1)]

Certificate

This is to certify that Shri/Smt./Kumari.....
(name with aliases, if any, and full address)
(place and district) on.....
(date in christian era). His /her death was due to non-natural cause(s) not being self-injury or suicide, namely*.....

*To be filled up in case of variation only.

2. As the nominee(s) at serial.....above is/are minor(s), I appoint the following person(s) to receive the sum due thereon in the event of my death during the minority of the nominee(s).

Name of nominee	Name and address of person appointed

Place	Date	Seal of Office	Signature of District Collector or District Magistrate

3. The Certificates detailed below are enclosed.

Sl. No. of Certificate	Denomination	Date of Issue	Office of Issue

*Non-natural cause(s) to be specified here. Accidents due to external, violent and visible means, including rail and road accidents, electrocution, snake bite, drowning, fire and attack by wild animal shall be treated as non-natural causes.

[F.No. 3/25/81-NS(ii)]

सां. कां. निं. 260(अ):—केन्द्रीय सरकार, सरकारी बचत-पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) की धारा 1 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए यह विनिर्दिष्ट करती है कि सामाजिक सुरक्षा-पत्र, बचत पत्रों का वह वर्ग होगा जिसे उक्त अधिनियम लागू होता है।

Address :

Yours faithfully,

(In case of illiterate holder, his name and his father's name should be given)

Signature (or thumb impression if illiterate) of holder.

[कां. सं. 3 (25)/81- एन० एस० (ii)]

ए० सी० तिवारी, संयुक्त सचिव

Witnesses :

Name } (1)
 Address }

Name } (2)
 Address }

G.S.R. 260(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 1 of the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959), the Central Government hereby specifies that the Social Security Certificates shall be the class of Savings Certificates to which the said Act applies.

[F. No. 3(25)/81-NS(ii)]

A. C. TIWARI, Jt. Secy.

